एक पखवाड़े में भी नहीं बन पाई हार्डवेयर चौक की सड़क

- महज 50 मीटर सड़क बनाने के लिए खर्च हो रहे 32 लाख
-काम के नाम पर पंद्रह दिन में लाल डस्ट ही डाली गई

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) शहर के तेज विकास के लिए गठित किया गया फरीदाबाद महानगर विकास प्राधिकरण (एफएमडीए) भी भ्रष्ट और सुस्त विभागों की तरह काम कर रहा है। हार्डवेयर चौक की महज पचास मीटर सड़क की मरम्मत का काम पंद्रह दिन में भी पूरा नहीं कराया जा सका है।

शहर को प्याली चौक, बाटा चौक, बीके और सोहना रोड से जोड़ने वाला हार्डवेयर चौक बीते चार साल से जर्जर हालत में है। काफी समय से शहरवासी इस चौक की मरम्मत कराए जाने की मांग कर रहे थे। एफएमडीए ने इस चौक पर मैस्टिफ एस्फाल्ट (तारकोल की मोटी परत) बिछाकर यातायात सुगम करने का निर्णय लिया था।

महज पचास मीटर से भी कम बनने वाली इस सड़क का खर्चा 32 लाख रुपये आंका गया है। काम के नाम पर 24 मार्च को लाल डस्ट का ढेर वहां लगा दिया गया। मरम्मत के नाम पर यही डस्ट दो तीन बार डलवाई जा चुकी है, लेकिन नियमित पानी का छिड़काव नहीं कराए जाने के कारण यह डस्ट उड़कर नष्ट हो रही है। आधुनिक मशीनों से अधिकतम दो से ढाई घंटों में मैस्टिफ एस्फाल्ट की परत बिछाई जा सकती है लेकिन एक पखवाड़ा बीतने के बाद भी सड़क ज्यों की त्यों है।

इन हालात को देखते हुए इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि उक्त रकम भी खर्च हो जाए और सड़क भी ज्यों की त्यों पड़ी रह जाए, और फिर नए बजट की मांग खड़ी कर दी जाए।

डीसी की गाड़ी बिगड़ी तो सड़क बनाने की सुध आई

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) सेक्टर 15 व 15 ए की विभाजक सड़क जो 15 ए की पुलिस चौकी से शुरु होकर जिमखाना क्लब तक जाती है, का नव निर्माण शीघ्र शुरू होने की बात चली है। करीब डेढ किलो मीटर लम्बी यह सड़क पूर्णतया जर्जर हो चुकी है। जगह-जगह बने खड्डों में आये दिन आम लोगों की गाड़ियां टूटती रही तो सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ा। पिछले दिनों जब डीसी की गाड़ी भी ऐसे किसी खड्डे में जाकर ठुकी तो इस सड़क को बनाने की सुध आई।

विदित है कि डेढ किलो मीटर लम्बी इस सड़क पर डीसी के अलावा सेशन जज, एडीसी व कई अन्य बड़े अधिकारियों के आवास हैं जो नित्य प्राय: इस सड़क से होकर अपने कार्यालयों को जाते हैं। बाकी जनता की बात तो छोड़िये, ज़िले के इन उच्चतम अधिकारियों के नित्य प्रति आवागमन के बावजूद इस सड़क पर ध्यान न देना सरकार की काहिली का एक उदाहरण है। इस सड़क के जर्जर होने का पहला कारण तो इसमें लगा घटिया माल व दूसरा कारण बरसाती पानी का लगातार खड़े रहना है। कहने को तो बरसाती पानी की निकासी के लिये लाइन डाली गई थी लेकिन वह केवल कागजों तक ही सीमित होकर रह गई लगती है।

अब इस सड़क को करीब आठ करोड़ की लगत से तारकोल की बजाय सीमेंट से बनाया जायेगा। इतना ही नहीं दो लेन वाली इस सड़क को चार लेन का बनाने के साथ-साथ फुटपाथ व साइकिल ट्रैक भी बनाने की बात कही जा रही है। बरसाती पानी की निकासी के लिये पहले से बनी जो लाइन गायब हो चुकी है उसे फिर से बनाया जायेगा। इसके द्वारा पानी की निकासी हो पायेगी या नहीं, यह तो समय ही बतायेगा। रही बात साइकिल ट्रैक की, तो उसे समझने के लिये करीब तीन साल पहले 18 लाख की लागत से बने उस साइकिल ट्रैक को देखा जा सकता है जो बाटा मोड़ से कचहरी होते हुए बाइपास तक जाता है। आज यह साइकिल ट्रैक कहीं ढूंढने से भी नज़र नहीं आता।

सेक्टरों की योजना बनाने वाले योजनाकर को शायद इतनी समझ नहीं थी कि उसके द्वारा रखी गई सड़कों की चौड़ाई पर्याप्त नहीं रहेगी। इसलिये अब चौड़ाई बढ़ाने के लिये सड़कों के किनारे खड़े वृक्षों की बलि चढ़ाई जायेगी, जैसे कि सेक्टर 14 व 17 की विभाजक एवं बाइपास को हाइवे से जोड़ने वाली सड़क के वृक्ष साफ कर दिये गये हैं। 'हूडा' के इन आधुनिक योजनाकारों से वे योजनाकार कहीं अधिक समझदार थे जिन्होंने 1948 में एनआईटी की योजना बनाते समय विभाजक सड़कों की चौड़ाई 200 फीट व भीतरी सड़कों की चौड़ाई 100 फीट तक रखी थी। यह बात अलग है जो राजनेताओं में अवैध कब्जे करा कर उन सड़कों को संकरा कर दिया।

आठ माह पूर्व हुई गुड़िया की हत्या को लेकर डीसी कार्यालय पर प्रदर्शन

मुजेसर पुलिस ने दर्जनों प्रदर्शनकारियों को जाने से रोका

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) गत वर्ष रक्षाबंधन के दिन 12 वर्षीय गुड़िया के साथ दुष्कर्म करने के बाद उसकी हत्या कर दी गई थी। घटना थाना मुजेसर के लगभग सामने रेलवे लाइन के साथ बसी आजाद नगर कॉलोनी की है।

यह जघन्य वारदात न केवल शहर में बढ़ते अपराध का द्योतक है बल्कि पीएम मोदी के उस स्वच्छता एवं 'खुले में शौच से मुक्त' अभियान की भी पोल खोलता है जिसके नाम पर मोदी सरकार ने विशेष टैक्स के जरिये जनता से अरबों-खरबों रुपये वसूले थे। करीब दो वर्ष पूर्व झूठ बोलने में माहिर मोदी ने भारत को 'खुले में शौच से मुक्त' घोषित कर दिया था। यहां के नगर निगम ने शौचालय बनाने के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च दिखा कर फ़ाइलों का पेटा भर दिया था। जनता को मुंह चिढ़ाते टूटे-फूटे एवं खंडहर शौचालय जगह-जगह देखे जा सकते हैं।

शहर की सैंकड़ों मज़दूर बस्तियों में रहने वाली 8-10 लाख की आबादी जिस तरह से खुले में शौच जाने को मजबूर है, उसी तरह आजाद नगर कॉलोनी वासी भी रेलवे लाइन के किनारे शौच करने को मज़बूर हैं। जाहिर है कि इस काम के लिये रात के अंधेरे में जाना ही उचित समझा जाता है। इसी अंधेरे का 'लाभ' उठा कर गुड़िया भी शौच के लिये गई थी जो कभी लौट कर न आ सकी, आ सका तो केवल उसका क्षत-विक्षत शव। आज तक इस केस का कोई अपराधी पकड़ा नहीं जा सका। कार्रवाई के नाम पर पुलिस ने कॉलोनी वासियों पर भी खूब जम कर डंडा घुमाया था।

वारदात के दिन से लेकर अभी तक विभिन्न मज़दूर एवं सामाजिक संगठनों द्वारा कई बार धरने प्रदर्शन किये जा चुके हैं। इसके बावजूद अभी तक किसी अपराधी का पकड़ा जाना तो दूर, शौचालयों की कोई व्यवस्था नहीं की जा सकी है। टूटे-फूटे व खंडहर शौचालय आज भी ज्यों की त्यों जनता को मुंह चिढ़ा रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि शासन-प्रशासन को जनता की कोई परवाह नहीं है। हां, प्रदर्शनकारियों को प्रदर्शन स्थल तक जाने से रोकने में पुलिस अपना पूरा जोर लगा देती है। हर बार की तरह इस बार भी मुजेसर पुलिस ने उन चार ऑटो-रिक्शाओं को हिरासत में ले लिया था जिन में लद कर प्रदर्शनकारी डीसी कार्यालय जा रहे थे। हिरासत में लिये गये मज़दूरों द्वारा हल्ला-गुल्ला करने पर उन्हें कुछ घंटों बाद छोड़ दिया गया था।

इसी मसले को लेकर दिनांक पांच अप्रैल को आजाद नगर संघर्ष समिति के नेतृत्व में शहर के अनेकों जन संगठनों ने प्रात: 10 बजे से सायं पांच बजे तक धरना देकर जोरदार प्रदर्शन किया। धरना स्थल पर आयी अतिरिक्त उपायुक्त अपराजिता को, मुख्यमंत्री के नाम लिखा ज्ञापन दिया गया। इसके कुछ देर बाद पांच सदस्यीय शिष्ट मंडल ने उपायुक्त विक्रम से मुलाकात कर उन्हें मामले की गम्भीरता से अवगत कराते हुए, अपराधियों को पकड़ने, गुड़िया की मां को बतौर मुआवजा 50 लाख, विधवा पेंशन तथा एक घर देने की मांग की। इसके अलावा बस्ती के खंडहर पड़े शौचालय को तुरन्त चालू कराया जाय। इस पर उपायुक्त ने तुरन्त निगमायुक्त को फोन करके शीघ्रातिशीघ्र शौचालय चालू करने को कहा। अन्य मांगों पर भी सहानूभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

मंझावली पुल एक दशक में भी बने या न बने, मीडिया चर्चा में बने रहना चाहिये

अब दिसम्बर 2023 तक पूरा करने का वायदा

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) 15 अगस्त 2014 को केन्द्रीय सड़क मंत्री नितिन गडकरी के हाथों पुल का शिलान्यास कराने के लिये स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीयमंत्री कृष्णपाल गूजर ने बहुत ही भारी-भरकम मजमा वहां जुटाया था। उस वक्त शायद पुल का निर्माण इतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना कि इसके नाम पर लाखों की भीड़ जुटाना। केन्द्रीय सत्ता पर काबिज होने के बाद अगला निशाना हरियाणा की सत्ता पर काबिज होना था, उसी के लिये प्रोपेगंडे के तौर पर वह नौटंकी की गई थी।

प्रोपेगंडे को असरदार बनाने के लिये, पुल के बनने से जनता को होने वाले फायदों का खूब बढ़-चढ़ कर ढोल पीटा गया था। फायदों का यह ढोल न भी पीटा जाता तो भी सारी जनता को यह मालूम है कि दिल्ली से घूम कर नोएडा जाने की अपेक्षा इस पुल के जरिये जाने से उन्हें समय और धन की भारी बचत होगी।

उस वक्त कुछ लोगों ने कहा था कि इस पुल का शिलान्यास करीब बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व तत्कालीन केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट ने भी किया था, इसके जवाब में भाजपा नेताओं ने कहा था कि वे नकली शिलान्यास नहीं करते, पुल को दो साल में चालू करके दिखा देंगे। भाजपाइयों की कार्यशैली की पूरी समझ रखते हुए मजदूर मोर्चा ने उसी वक्त यह प्रकाशित कर दिया था कि दो साल में पुल चालू करना तो दूर इसकी डीपीआर भी बना दें तो बड़ी बात होगी। हुआ भी वही, दो साल में डीपीआर नहीं बनी और नौ साल में पुल भी नहीं बना। लेकिन पुल के मुद्दे को मीडिया में जिंदा रखने के लिए कृष्ण पाल हर दूसरे-तीसरे महीने कोई न कोई शोशा छोड़ते आ रहे हैं।

अब यह कहा जा रहा है 31 दिसंबर 2023 पुल का काम पूरा होने की डेडलाइन रखी गई है। मौका मुआयना करने से पता चलता है कि 630 मीटर लंबे पुल के ऊपर का काम तो इस अवधि में शायद पूरा हो भी जाए लेकिन पुल तक पहुंचने के लिए न तो फरीदाबाद की साइड में और न ही नोएडा की साइड में किसी पहुंच सड़क का निर्माण कार्य शुरू किया गया है। जब पुल तक पहुंचने की कोई सड़क ही नहीं होगी तो पुल किस काम आएगा, यह जनता की समझ से तो बाहर है। इतनी बात तो जरूर समझ में आती है कि जिस काम को यह करना चाहें उसे तो यह तुरत-फुरत कर लेते हैं। जैसे कि बीस हजार करोड़ का सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट, मोदी के लिए साढ़े आठ करोड़ का हवाई जहाज, संघ के लिए संभालखा (पानीपत) में हजार करोड़ रुपये का भवन, सेक्टर 15 में भाजपा का भव्य जिला मुख्यालय आदि आदि तो बनाए जा सकते हैं लेकिन आम जनता की जरूरतों के लिए इस तरह का पुल बनाने में इनकी कोई विशेष रुचि नहीं है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।